श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

सितम्बर - द्वितीय, अंक - 26 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

पर्व दिवसों में आत्मा केन्द्र बिन्दु रहे

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

प्रत्येक अवस्था में जीव अपने स्वरूप में बना रहे। जड़ और जीव का भेद करते हुए जिन धर्म का आधार भेद विज्ञान, प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति के जीवन में आए। शरीर भिन्न व आत्मा भिन्न की समझ बढ़ती जाए। प्रत्येक साधक जीव व अजीव का ज्ञाता बने।

सेठ सुदर्शन जीव और अजीव के ज्ञाता थे। शरीर पर उदय कर्म के अधीन इतना बड़ा उपसर्ग आया किंतु भेदविज्ञानी सेठ सुदर्शन ने निमित्त को निर्दोष मानकर, अपनी श्रद्धा को परिपक्व किया। जीव आत्मा अजर-अमर अविनाशी है, अष्ट गुणों से युक्त है, इसे कोई मार नहीं सकता। शरीर पर है, पराया है। मैं शरीर हूँ ही नहीं, यह शरीर कर्म क्षय का साधन मात्र है। उदय कर्म आया है तो स्वीकार है। मैं अपने स्वभाव की शरण में जाता हूँ और उदय कर्म को स्वीकारता हूँ। जैसे ही वे शुक्ल ध्यान में प्रवेश कर गये, मुद्गरपाणियक्ष की शक्ति क्षीण हो गई। धर्म की शक्ति के आगे विभाव की शक्ति क्षीण हो गई और यक्ष अर्जुन माली को छोड़कर पलायन कर गया।

सुदर्शन सेठ ने कोई मंत्र-तंत्र की शक्ति का उपयोग नहीं किया। वे आत्मा की शरण में गये और प्रभु को भाव नमन कर समाधि में बैठ गये। उपसर्ग टला तो प्रभु आपके प्रत्यक्ष दर्शन करूंगा, नहीं तो यहीं से मेरा वंदन स्वीकार करें। आत्म शक्ति के सामने आसुरी शक्ति भी पलायन कर गई। उदय में आया कर्म भी क्षय हो गया। निमित्त-अर्जुन माली पर सेठ सुदर्शन ने जरा भी राग-द्वेष न करते हुए उसमें शुद्धात्मा के दर्शन किये एवं उन्हें भगवान के समवसरण में ले जाने के निमित्त बने, ये हैं आत्मदृष्टि वाले श्रावक के लक्षण। पर्व पर्युषण में हम सभी "सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्ग" की आराधना कर, अपने जीव को केन्द्र बिन्दु बनायें।

जड़-जीव के भेद विज्ञान को जानकर, भेद की जगह भेद व अभेद की जगह अभेद दृष्टि का प्रयोग करें। भेद अर्थात् शरीर भिन्न, आत्मा भिन्न। अभेद अर्थात् प्रत्येक जीव गुण दृष्टि से एक समान हैं। न कोई अपना, न कोई पराया। राग-द्वेष समाप्त कर संवर, निर्जरा की साधना करें। गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा परीषहजय, चारित्र, तप के द्वारा इन पर्व दिवसों में साधना में लीन रहे। आत्मा पर श्रद्धा करते हुए, मन, वचन, काया का निग्रह कर, त्रिगुप्ति समिति पूर्वक भेद विज्ञान से कर्म निर्जरा करें। (शेष पृष्ठ 5 में)

अध्यक्षीय

संवत्सरी - क्षमा से निर्मल हो अंतर्मन, मैत्री से महके जीवन

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

संवत्सरी महापर्व जैन संस्कृति की उस दिव्य चेतना का पर्व है, जो हमें संसार को देखने से पहले स्वयं के भीतर झाँकने की प्रेरणा देता है। यह आत्मावलोकन, आत्मशुद्धि, प्रायश्चित और क्षमाभाव की अनुपम साधना है। वर्षभर में हमारे मन, वचन और काया से जाने-अनजाने जो त्रुटियाँ हुईं, उन्हें सहज भाव से स्वीकार कर अंतर्मन को राग-द्वेष, अहंकार और वैमनस्य से मुक्त करने का यह पावन अवसर है।

क्षमा वीरस्य भूषणम्। क्षमा मांगना कमजोरी नहीं, अपितु विनय, आत्मबल और महानता का परिचायक है। अपनी भूल स्वीकार करने के लिए साहस चाहिए और दूसरे की भूल को हृदय से विस्मृत कर उसे क्षमा करने के लिए उससे भी अधिक विशालता। संवत्सरी हमें यही सिखाती है कि मन की गांठें खोलकर जीवन को मैत्री, करुणा और सद्भाव से परिपूर्ण किया जाए।

इस परम पावन प्रसंग पर मैं सर्वप्रथम पूज्य महासाध्वी जी महाराज एवं समस्त साध्वी भगवंतों के पावन चरणों में अत्यन्त विनयपूर्वक खमत-खामणा करता हूँ। मेरे किसी शब्द, व्यवहार अथवा कार्य से जाने-अनजाने, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई अविनय, अशातना अथवा मन को ठेस पहुँचाने वाला भाव उत्पन्न हुआ हो, तो उसके लिए अंतर्मन से क्षमाप्रार्थी हूँ। पूज्य भगवंत मुझे क्षमा प्रदान कर अपना मंगल आशीर्वाद बनाए रखें।

इसी भाव से मैं जैन कॉन्फ्रेंस के समस्त राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों, महिला शाखा, युवा शाखा, कार्यकर्ताओं, सहयोगियों तथा समस्त श्रावक-श्राविका समाज से भी हृदय की गहराइयों से खमत-खामणा करता हूँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन करते हुए अनेक अवसरों पर संगठनहित में निर्णय लेने पड़े हैं। यदि कभी मेरे शब्दों में अनजाने कठोरता आ गई हो, किसी निर्णय या असहमति से किसी की भावना आहत हुई हो, किसी आयोजन अथवा बैठक में किसी को अपेक्षित सम्मान या समय न दे पाया हूँ, अथवा मेरे किसी व्यवहार से मन-मुटाव या पीड़ा उत्पन्न हुई हो, तो उन सभी ज्ञात-अज्ञात भूलों के लिए मैं विनम्रतापूर्वक क्षमा चाहता हूँ।

आज संवत्सरी के इस पुण्य अवसर पर मैं भी अपने अंतर्मन से सभी के प्रति राग-द्वेष, शिकायत और वैमनस्य का त्याग करते हुए हृदयपूर्वक क्षमा का भाव रखता हूँ। हमारी व्यक्तिगत असहमतियाँ समाप्त हों, हृदयों की दूरियाँ मिटें और संगठन में प्रेम, विश्वास, आत्मीयता तथा एकता और अधिक सुदृढ़ हो - यही मेरी मंगल भावना है।

सम्पादकीय

तीर्थंकर तुलना के विषय नहीं हैं

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय के मल्टीपर्पस हॉल में आयोजित राष्ट्रभक्ति एवं जैन समाज के समन्वित कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में एक दिगंबर जैन मुनिराज का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। राष्ट्रभक्ति, सामाजिक समन्वय और जैन मूल्यों के प्रसार की दृष्टि से ऐसे आयोजन निश्चित रूप से स्वागत योग्य हैं।

कार्यक्रम में मुनिश्री जी द्वारा रक्षा मंत्री जी की तुलना भगवान ऋषभदेव जैसे तीर्थंकर से किए जाने से समाज में असमंजस और चर्चा का वातावरण बना। श्री राजनाथ सिंह जी देश के वरिष्ठ राजनेता हैं। उनके व्यक्तित्व, सार्वजनिक जीवन और राष्ट्रसेवा का सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन सम्मान और अतिशयोक्ति के बीच एक मर्यादा-रेखा होती है। किसी राजनीतिक अथवा गृहस्थ व्यक्ति की तुलना तीर्थंकर से करना उस मर्यादा का अतिक्रमण है।

यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि ऐसी टिप्पणी पहली बार नहीं हुई है। जैन समाज की विभिन्न परंपराओं में समय-समय पर साधु-साध्वियों अथवा श्रावकों द्वारा अपने गुरु, राष्ट्रीय नेताओं या विशिष्ट व्यक्तियों की तुलना तीर्थंकरों से किए जाने के उदाहरण मिलते रहे हैं। अंतर केवल इतना है कि आज सोशल नेटवर्किंग का युग है और मुनि श्री स्वयं सोशल मीडिया के माध्यमों से अत्यंत सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। इसलिए इस बार कही गई बात व्यापक स्तर पर प्रसारित हुई और स्वाभाविक रूप से सार्वजनिक विमर्श का विषय बन गई। अतः इसे किसी एक परंपरा अथवा व्यक्ति विशेष के विरुद्ध टिप्पणी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए मूल प्रश्न जैन दर्शन की मर्यादा का है।

तीर्थंकरत्व आत्मविजय की वह परम अवस्था है, जहाँ राग-द्वेष, मोह और समस्त सांसारिक बंधनों का अतिक्रमण कर केवलज्ञान की उपलब्धि होती है। भगवान ऋषभदेव इस महान परंपरा के प्रथम तीर्थंकर हैं। उनका जीवन राजवैभव से त्याग, तप और आत्मसाधना की सर्वोच्च यात्रा का प्रतीक है। इसकी तुलना किसी सांसारिक पद, सत्ता अथवा प्रतिष्ठा से नहीं की जा सकती, इसलिए प्रश्न श्री राजनाथ सिंह जी के सम्मान का नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या किसी व्यक्ति का सम्मान करने के लिए तीर्थंकरों को उपमा बनाना आवश्यक है? निश्चित रूप से नहीं।

जैन साधु-साध्वियों की वाणी सामान्य वाणी नहीं होती। समाज उनके शब्दों में धर्म का मार्गदर्शन और दर्शन की दृष्टि खोजता है। इसलिए सार्वजनिक मंच पर उनके शब्दों की जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी होती है। (शेष पृष्ठ 5 में)

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली

सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन - इंदौर, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिव मुनि जी म. की 85वीं जन्म जयंती के शुभ प्रसंग पर वंदन-अभिनंदन!

✻ 1. श्रमण संघीय द्वितीय आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज एवं उनके शिष्य वर्तमान युवाचार्य श्री महेंद्र ऋषि जी महाराज के साथ। ✻ 2. श्रमण संघीय तृतीय आचार्य श्री देवेंद्रमुनि जी महाराज के साथ। ✻ 3. श्वेतांबर मूर्ति पूजक जैन आचार्य श्री नित्यानंद सुरीश्वर जी महाराज के साथ। ✻ 4. तेरापंथ धर्म संघ जैन आचार्य श्री महाश्रमण जी महाराज के साथ।

पर्युषण पर्व आत्म शुद्धि का पर्व

– युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

भारतीय संस्कृति का हार्द, सार, आत्मारूप कोई तत्व है तो वह है 'आत्मा'। वैदिक धारा, श्रमण धारा दोनों ही आत्मा को केन्द्र में रखकर प्रवाहित हुई है। आत्मा की सत्ता को संसार के समक्ष पूर्ण सामर्थ्य से प्रस्तुत करने वाली भारतीय विचारधारा ही है। विश्व धर्म सम्मेलन के 'शिकागों' सभा में स्वामी विवेकानंद के दिल को जीत लेने वाले दो शब्द Brothers and Sisters (भाईयों और बहनों) आत्मदृष्टि के ही बोल थे। आत्मतत्व व्यक्ति को समष्टि से जोडने वाला सेतु है। बौद्ध दर्शन ने आत्मतत्व को स्वीकार नहीं किया किन्तु आत्मा से जुडी अनेकों तथ्य (सन्तति आदि के रूप में वहां भी उपस्थित है ही। तात्पर्य यही है कि आत्मा को सत्ता, व्यापकता, गुणयुक्तता के सम्बन्ध में प्रायः सभी दार्शनिक एकमत हैं। आत्मा के सत्ता के साथ आत्म-साधना अर्थात अविनाशी, शाश्वत तत्व के मूलभूत स्वरूप को जानना अनुभव करना, प्रकट करना।

आत्म-साधना हेतु सभी दर्शनों ने अपनी-अपनी मान्यता तथा अपने इष्ट को लक्ष्य में रखकर अनेकों पद्धति तथा विशेष पर्वों की परंपरा स्थापित की है। जैन दर्शन अपने आप में एक वैशिष्ट्यपूर्ण पहचान रखता है। आत्मा के सन्दर्भ में जैन दर्शन ने अत्यंत सूक्ष्मता से विवेचन किया है। जैन आगम, दिंगबर आचार्यों का रचित साहित्य, आगमचूर्णि, व्याख्या, निर्युक्ति आदि प्रचुर साहित्य आत्मस्वरूप, आत्म-साधना से संबंधित तथ्यों की चर्चा प्रस्तुत करता है। जैन दर्शन, जिसे प्राचीनकाल में निर्ग्रन्ध धर्म के नाम से जाना जाता था तीर्थंकरों की देन है। राज्य वैभव का त्याग करके साधना करने वाले तथा साधना से ही कर्मों की कालिया दूर करने वाले तीर्थंकर होते हैं। उन की साधना जन-जन के लिये प्रेरणा रूप बनती है। उनके दर्शन, उनकी देशना आत्मा के दिव्यतेज को प्रकट करती है। उन्हीं तीर्थंकरों से बोधिप्राप्त गणधरों ने तथा उनके उत्तर-वर्ती आचार्यों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया।

जैन परम्परा ने आत्म-साधना हेतु संवर एवं तप की विधि का प्रतिपादन किया। आत्म-साधना को लक्ष्य में रखकर अष्टान्हि का महोत्सव की व्यवस्था प्रचलित हुई। लौकिक तथा अन्य धर्म परंपराओं के उत्सव महोत्सव भौतिक साधनों, लक्ष्यों से मनाये जाते हैं। जैन परंपरा ने अष्टान्हिका महोत्सव को तपस्या, प्रत्याख्यान, सादगी से मानने की रीति रखी। तप-त्याग के साथ-साथ भावों की निर्मलता, पवित्रता, शुद्धता के लिये क्षमा मृदुता ऋजुता निर्लोभता आदि गुणों की अभिवृद्धि का लक्ष्य रखा।

इस अष्टान्हि का महोत्सव को वर्तमान समय में श्रद्धालु वर्ग पर्युषण पर्व के नाम से जानता है। चातुर्मास प्रारंभ के पश्चात उनपचासवें अथवा पचासवें दिन संवत्सरी को लक्ष्य करके पर्युषण पर्व मनाया जाता है। यह पर्युषण पर्व जैन परंपरा द्वारा आत्म-साधना हेतु प्रदत्त, प्रचलित एक अवसर है। इन आठ दिनों में आत्मशुद्धि, आत्मअनुभूति हेतु विशेष कार्यक्रम अपेक्षित होते हैं. आयोजित होते हैं।

पर्युषण शब्द आगमिक 'पन्जोसणा' शब्द का संस्कृत रूप है। पर्युषण का अर्थ है चारों तरफ से जलाना। यह एक आध्यात्मिक विज्ञान से जुड़ा शब्द है। सोना-चांदी आदि खनिज (मिट्टी से उत्पन्न) धातुओं को शुद्ध बनाने की प्रक्रिया जलाने की ही होती है। जब तक वह धातु और मिट्टी दोनों को एक साथ आग में गलाया, जलाया नहीं जाता तब तक धातु अशुद्ध रहते है।। आग में तपकर धातुएं शुद्ध बनती है। इसी तरह पर्युषण का भावार्थ है। आत्मा और कर्म धातु-मिट्टी की तरह अनादिकाल से एक दूसरे से मिश्रित है। इन कर्मों की रजको दूर करने के लिये इन्हें तपाना पड़ेगा, यह प्रायोगिक तथ्य है। आत्मा से कर्मों के मल को दूर करने के लिये अपनाई जाने वाली प्रक्रिया है पर्युषण। श्रद्धालु वर्ग आठ दिनों तक आत्मलक्ष्यी बनकर अपने आपको शुद्ध बनाये शायद यही भाव उस परंपरा के पीछे हमारे गणधरों आचार्यों का रहा होगा।

आत्मा का शुद्ध रूप में सदा के लिए स्थित हो जाना सिद्धत्व है। सिद्धत्व की प्राप्ति यह प्रत्येक जीव का लक्ष्य होना ही चाहिये। इसी को अनुलक्षित करके यह आत्म-साधना पद्धति का पर्व सदियों से प्रचलित है। पर्युषण पर्व के आठों दिन बाह्यदृष्टि को अन्तर्दृष्टि में परिवर्तित किया जाता है। प्रत्येक श्रद्धालु जैन अपने बाहरी कामकाज को तथा शरीरिक साजसज्जा को छोड़कर अपने स्वरूप में रमण का पुरुषार्थ करता है। तप के माध्यम से आहार की आसक्ति को कम करता है। आहार यह चित्त के बहिर्मुख होने का प्रथम सोपान होता है। अधिक से अधिक उपवास अथवा उनोदरी के द्वारा आहार पर नियंत्रण किया जाता है। स्वाध्याय के द्वारा परमात्मा के वचनों का, आगम का वाचन, चिंतन करके स्व को जानने का प्रयास होता है। अन्तगड़सूत्र का स्वाध्याय आत्मशुद्धि के शिखर को छूने वाले महान आत्माओं की जीवनगाथा से प्रेरणा देता है आत्मशुद्धि की ओर बढ़ने की। प्रतिक्रमण से अपने दुष्कृत्यों द्वारा संचित पापो से हल्का होने का अवसर प्राप्त होता है।

पर्युषण में प्रायः सभी जैन धर्मानुयायी बाहरी व्यापारों से निवृत्त होते हैं। जैनियों का यह परम कर्त्तव्य ही होता है कि वह व्यावसायिक, पारिवारिक तथा गृहस्थी से संबंधी कार्यों से आठ दिन के लिये निवृत्त हो। बाह्य प्रवृत्ति के त्याग के बिना अन्तर्मुख होना असंभव होता है। पर्युषण पर्व में सर्वत्र यह वातावरण होता है कि बाह्य प्रवृत्तियों को आठ दिनों के लिये सर्वथा छोड़ा जा सकता है या अल्प तो किया ही जा सकता है। पर्युषण पर्व में आत्म आराधना करके हम अपने जैनत्व को सार्थक बनायें तथा समस्त संसार को अपनी साधना से प्रेरणारूप बनें।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY
916 HALL MARK SHOWROOM
POLUR
JAIN
SILKS & READYMADES
POLUR
varnalaya
POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD
MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD
COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

काम की चीज

दुर्जन लोगों का एक ही काम होता है - सज्जन लोगों को परेशान करना और उनको कष्ट देना। इसके विपरीत सज्जन लोगों का स्वभाव होता है - दुर्जनों की दुष्टता से अप्रभावित रहते हुए सद्कार्यों में लगे रहना। 'सज्जनता' बुराई में से भी अच्छाई खोज लेती है। यही बात नीचे दी गई कहानी में प्रकट हो रही है।

एक बार गांधी जी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने समुद्री जहाज द्वारा इंग्लैंड जा रहे थे। प्रार्थना और चरखा कातने जैसे उनके दैनिक कार्यक्रम जहाज में भी अबाध गति से चलते रहे। गांधी जी का सहज भारतीय जीवन अंग्रेज बच्चों के लिए कौतूहल का विषय था। वे जहाज में गांधी जी को घेर कर बैठ जाते और उन्हें प्रार्थना करते या चरखा कातते देखते रहते।

भारत का स्वाधीनता संग्राम संचालित करने के कारण गांधी जी को अंग्रेज अपना शत्रु मानते थे। एक बार गांधी जी डेक पर घूम रहे थे। एक अंग्रेज वहाँ आया और उन्हें गाली देने लगा। गांधी जी पर गालियों का कोई असर न हुआ। यथावत् वे घूमते रहे। अंग्रेज ने उन्हें दुखी करने का एक और उपाय खोजा। उसने एक कागज पर गालियाँ लिखी और गांधी जी को पकड़ा दी। गांधी जी ने बिना पढ़े उसमें से पिन निकाली और कागज को कूड़ेदान में फेंक दिया।

एक बार फिर अपना प्रयत्न निरर्थक देखकर अंग्रेज बोला- ''अरे गांधी! यह कविता पढ़ो तो सही, इसमें तुम्हारे लिए बहुत काम की चीज है।'' गांधी जी मुस्कराए। जो पिन उन्होंने निकाल कर डिबिया में रख ली थी, उसकी ओर इशारा करते हुए बोले - ''हाँ... हाँ... अपने काम की चीज मैंने संभाल कर रख ली है।''

उनके इस विनोद भरे कटाक्ष से वहाँ मौजूद उनके साथी और सभी अंग्रेज हँस पड़े।

कीचड़ में से कमल वही चुन पाता है, जिसके अन्तर्नेत्र खुले हों। वास्तविक उजाला अन्तर्नेत्र ही देख सकते हैं। चर्म-चक्षुओं को भी अन्तर्नेत्र ही उजाला दिखा सकते हैं। ऐसा उजाला जिसमें कीचड़ और कमल का अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई दे। कीचड़ की भारी खपत वाली इस दुनिया में कुछ ही महापुरुष होते हैं जो दूसरों के अन्तर्नेत्र खोलते हैं। विष से अमृत खोज लेना, मनुष्य की सबसे बड़ी योग्यता है।

जैन दर्शन अभ्यास श्रृंखला...

आत्म-जागरूकता

सरल समझ : अपने विचारों, भावों और कषायों को बिना बहने के जानना आत्म-जागरूकता है। क्रोध या चिंता आत्मा का शुद्ध स्वभाव नहीं, बदलती हुई अवस्थाएँ हैं, उन्हें जानने वाला चेतन आत्मा है।

आत्मचिंतन : जब क्रोध उठता है, क्या मैं कहता हूँ 'मैं क्रोधित हूँ', या जागरूक होकर देख सकता हूँ-'मेरे भीतर क्रोध का भाव उठ रहा है'?

आज का संकल्प : आज तीन बार एक मिनट रुककर अपने मन को देखूँगा-बिना निर्णय, बिना प्रतिक्रिया; केवल जानने वाले भाव में।

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा के दुर्लभ चित्र श्रृंखला...

चित्र परिचय

सन् 1950 के दशक में स्थानकवासी जैन पंजाब परंपरा की मान्य साध्वी श्री पदमश्री जी महाराज अपने साध्वी मंडल के साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पद विहार यात्रा में। साथ में साध्वी श्री सत्यवती जी महाराज, साध्वी श्री सज्जनकौर जी महाराज, साध्वी श्री पवन कुमारी जी महाराज आदि साध्वीवृंद एवं आदर्श श्राविका श्रीमती केला देवी जैन (चरण वंदन करते हुए), श्रीमती जैनोदेवी जैन।

सौजन्य : महेश चंद जैन, शालीमार बाग दिल्ली, संदर्भ : शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

तेरापंथ धर्मसंघ के भावी युवाचार्य पद के लिए आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा मुनि श्री महावीर कुमार जी की घोषणा

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के महामहिम आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी महाराज ने दी मंगलकामनाएँ

सूरत (फाईल फोटो)

लाडनूं (चित्र सौजन्य : सुखराज सेठिया जैन, दिल्ली)

लाडनूं (राजस्थान) : तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज ने मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया तथा चादर ओढ़ाकर भावी दायित्व सौंपा। यह निर्णय तेरापंथ की सुदृढ़ आचार्य-परंपरा, अनुशासन एवं दूरदर्शी नेतृत्व व्यवस्था का महत्वपूर्ण अध्याय है।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से नवनियुक्त युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी को हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित की गई। तेरापंथ के पूर्व आचार्यों के साथ जिस प्रकार स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने सदैव सद्भाव, सहयोग और आत्मीयता का संबंध बनाए रखा है, वही सकारात्मक परंपरा भविष्य में भी निरंतर आगे बढ़ती रहेगी। विशेष उल्लेखनीय है कि सूरत में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज एवं तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज का मंगल मिलन भी जैन श्रमण परंपराओं के पारस्परिक सम्मान, सद्भाव एवं आध्यात्मिक सौहार्द का प्रेरक उदाहरण रहा है।

स्थानकवासी जैन श्रमण संघ एवं जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज के इस दूरदर्शी एवं परंपरापोषक निर्णय का अभिनंदन करते हुए कहा गया कि तेरापंथ धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य के लिए आचार्यश्री ने जो नेतृत्व-निर्णय लिया है, उसमें स्थानकवासी जैन श्रमण संघ एवं जैन कॉन्फ्रेंस सदैव सकारात्मक सहयोग, सद्भाव एवं आत्मीयता के साथ सहभागी रहेगी। नवनियुक्त युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के प्रति मंगलभावना व्यक्त करते हुए उनके नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ की आध्यात्मिक प्रभावना और अधिक विस्तृत होने की कामना की गई। - जैन प्रकाश संपादकीय टीम

जैन प्रकाश पाठक का पत्र

शिव संदेश संयम और संयम की परिभाषा, अध्यक्षीय में धर्म केवल आराधना नहीं जीवन की दिशा बने, संपादकीय Gen-Z की दस्तक क्या जैन समाज सुन रहा है? बदलते समाज और हमारी जिम्मेदारी, संस्कारों से ही सुरक्षित होगा हमारा भविष्य, प्रमाद से प्रमोद, प्रोफेसर अलबर्ट बेबर, गुरु आनंद जन्मोत्सव, महापुरुष श्रृंखला मे डॉ. दौलत सिंह कोठारी जैन, राजाबाई जैन क्लॉक टावर सभी जानकारियाँ है, वाचनीय और ग्रहणीय रही। हार्दिक अभिनंदन, कृपया आगे जैन समाज को अल्पसंख्यक आयोग द्वारा मिलने वाली सुविधाओं का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार हो इस पर भी विशेष ध्यान देने की कृपा करें। धन्यवाद, सादर जय जिनेंद्र! प्रेषक : प्रकाश कोठारी जैन, ठाणे

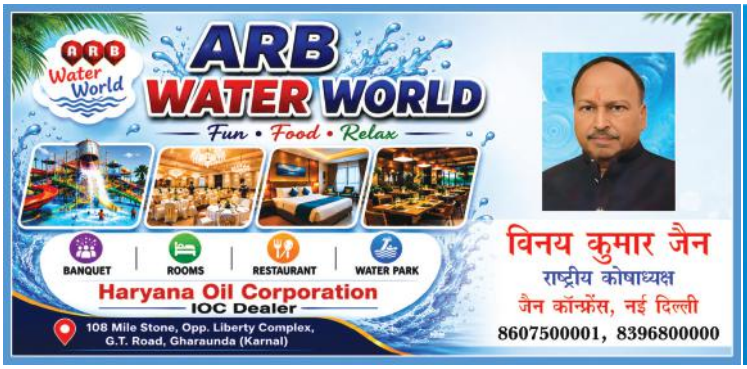

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) अध्याय 32

कर्ता से साक्षी की ओर संक्रमण

(गहन विस्तार)

अब तक हमने कर्ताभाव, नियंता भाव, रक्षक भाव, ज्ञाता भाव-अहंकार की अनेक परतों को समझा। हमने देखा कि ऊर्जा कैसे ऊपर फँसती है और श्वास कैसे उसे नीचे लाती है। अब प्रश्न है-इस पूरी समझ का सार क्या है? उत्तर है-कर्ता से साक्षी की ओर संक्रमण। यही वह बिंदु है जहाँ प्रमाद ढहने लगता है और प्रमोद की संभावना जन्म लेती है।

1. कर्ता कौन है? : कर्ता वह है जो स्वयं को केंद्र मानता है। "मैं कर रहा हूँ।" "मैं निर्णय ले रहा हूँ। "मैं नियंत्रित कर रहा हूँ।" कर्ताभाव आवश्यक कार्य करता है, पर स्वयं को कार्य से जोड़ लेता है।

2. साक्षी कौन है? : साक्षी वह है जो देखता है। वह देखता है कि कर्म हो रहा है। विचार उठ रहे हैं। भाव आ-जा रहे हैं। पर वह स्वयं को उनसे जोड़ता नहीं। साक्षी अलगाव नहीं है। साक्षी जागरूक सहभागिता है।

3. संक्रमण कैसे होता है? : कर्ता से साक्षी में परिवर्तन एक क्षण में नहीं होता। यह देखने की निरंतर प्रक्रिया है। जब आप कहते हैं-"अभी मैं क्रोधित हूँ" तो कर्ता सक्रिय है। जब आप कहते हैं-"अभी क्रोध उठ रहा है" तो साक्षी सक्रिय है। यह सूक्ष्म भाषा परिवर्तन भीतर दृष्टि परिवर्तन का संकेत है।

4. प्रतिक्रिया से अवलोकन तक : कर्ता प्रतिक्रिया देता है। साक्षी प्रतिक्रिया को देखता है। कर्ता परिणाम से जुड़ता है। साक्षी कर्म को देखता है। कर्ता नियंत्रण चाहता है। साक्षी स्वीकार करता है। यह अंतर अभ्यास से स्पष्ट होता है।

5. शरीर में संक्रमण : जब कर्ताभाव सक्रिय होता है, तो छाती कठोर होती है। जब साक्षी सक्रिय होता है, तो श्वास गहरी होती है। जब कर्ता तनाव में होता है, तो नाभि कसती है। जब साक्षी देखता है, तो नाभि नरम होती है।

6. साक्षी और समर्पण : साक्षी बनने का अर्थ है सब छोड़ देना नहीं। यह कर्म से भागना नहीं है। यह कर्म में उपस्थित रहना है बिना पहचान जोड़े। यह समर्पण है-पराजय नहीं।

7. ज्ञाता से साक्षी तक : ज्ञाता कहता है-"मैं जानता हूँ।" साक्षी कहता है-"देख रहा हूँ।" ज्ञाता निष्कर्ष बनाता है। साक्षी खुला रहता है। जहाँ खुलापन है, वहीं विकास है।

8. अभ्यास - एक सरल प्रयोग : जब भी कोई तीव्र भावना उठे-रुकें। तीन गहरी श्वास लें। भीतर कहें-"यह भावना उठ रही है।" न कि-"मैं ऐसा हूँ।" धीरे-धीरे पहचान ढीली पड़ती है।

9. साक्षी और स्वतंत्रता : कर्ता बंधा है-परिणाम से, पहचान से, भय से। साक्षी स्वतंत्र है-क्योंकि वह केवल देखता है। देखना मुक्त करता है।

10. अंतिम स्पष्टता : कर्ता से साक्षी की ओर संक्रमण प्रमाद से प्रमोद की केंद्रीय यात्रा है। जहाँ कर्ताभाव ढीला पड़ता है, वहाँ हल्कापन आता है। जहाँ साक्षी स्थिर होता है, वहाँ आनंद स्वतः प्रकट होता है। अगले अध्याय में हम प्रवेश करेंगे-ऊर्जा की गांठें क्या हैं और वे कैसे बनती हैं।

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

कन्नड़ की जैन साहित्य परंपरा को विश्व से परिचित कराने वाले महान विद्वान : रेवरेण्ड फर्डिनैंड किटेल

जन्म : 7 अप्रैल 1832, रेस्टरहाफे, ईस्ट फ्रिसिया, जर्मनी निधन : 18 दिसंबर 1903, ट्यूबिंगेन, जर्मनी

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

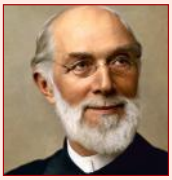

कन्नड़ भाषा और जैन धर्म का संबंध अत्यंत प्राचीन एवं अविभाज्य है। कन्नड़ साहित्य के आदिकाल को प्रायः 'जैन युग' कहा जाता है। पंप, पोन्न, रन्न, नागवर्म और केशिराज जैसे महान रचनाकारों ने कन्नड़ साहित्य को समृद्ध करते हुए जैन दर्शन, अहिंसा, अनेकांत और नैतिक जीवन-मूल्यों को साहित्य में प्रतिष्ठित किया।

इस गौरवशाली परंपरा के अध्ययन, संरक्षण और उसे आधुनिक विद्वत् जगत के समक्ष प्रस्तुत करने वाले विदेशी विद्वानों में रेवरेण्ड फर्डिनैंड किटेल का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। जर्मनी में जन्मे किटेल 1853 में भारत आए और दक्षिण भारत में रहते हुए कन्नड़ भाषा के गहन अध्येता बने। उन्होंने कन्नड़ को केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि उसकी साहित्यिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं के समग्र संदर्भ में समझने का प्रयास किया।

कन्नड़ भाषा के महान शब्दकोशकार : किटेल की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति 'A Kannada-English Dictionary' 1894 में प्रकाशित हुई। लगभग 1750 पृष्ठों के इस विशाल शब्दकोश में कन्नड़ के हजारों शब्दों के अर्थ, प्रयोग और साहित्यिक संदर्भ संकलित किए गए। प्राचीन कन्नड़ साहित्य से उदाहरण लेकर शब्दों की व्युत्पत्ति और प्रयोग को स्पष्ट करने की उनकी पद्धति उन्हें अपने समय के विशिष्ट भाषाविदों की श्रेणी में स्थापित करती है।

उनकी दूसरी महत्वपूर्ण कृति 'A Grammar of the Kannada Language in English' 1903 में प्रकाशित हुई, जिसमें कन्नड़ भाषा की व्याकरणिक संरचना का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया।

जैन साहित्य के प्रति विशेष योगदान : कन्नड़ की प्राचीन साहित्यिक परंपरा मूलतः जैन आचार्यों और कवियों के महत्वपूर्ण योगदान से निर्मित हुई थी। इसलिए किटेल के कन्नड़ साहित्य और भाषा संबंधी अध्ययन में जैन साहित्य का समावेश स्वाभाविक था। पंप, पोन्न, रन्न और नागवर्म जैसे जैन रचनाकारों की कृतियों, जैन पारिभाषिक शब्दावली तथा प्राचीन साहित्यिक स्रोतों के अध्ययन के माध्यम से उन्होंने कन्नड़ की उस समृद्ध परंपरा को आधुनिक भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए सुरक्षित किया, जिसकी जड़ें जैन संस्कृति में गहराई तक विद्यमान थीं।

विशेष रूप से प्राचीन कन्नड़ के व्याकरण और छंदशास्त्र के अध्ययन ने इस साहित्यिक विरासत को व्यापक विद्वत् समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समन्वय और विद्वत्ता की मिसाल : किटेल स्वयं ईसाई धर्मावलंबी थे, किंतु भारतीय भाषाओं, धर्मों और सांस्कृतिक परंपराओं के अध्ययन के प्रति उनकी दृष्टि व्यापक और निष्पक्ष थी। उनका जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि ज्ञान की कोई सीमा धर्म, देश अथवा भाषा से निर्धारित नहीं होती।

18 दिसंबर 1903 को ट्यूबिंगेन, जर्मनी में उनका निधन हुआ, किंतु उनका कन्नड़ शब्दकोश, व्याकरण और साहित्य संबंधी शोध आज भी कन्नड़ भाषा के अध्ययन के महत्वपूर्ण आधार माने जाते हैं।

कन्नड़ की प्राचीन साहित्यिक यात्रा जैन धर्म और उसकी समृद्ध साहित्य-परंपरा के बिना अधूरी है। इस परंपरा को आधुनिक शोध की दृष्टि से समझने और विश्व के विद्वत् समाज तक पहुँचाने में रेवरेण्ड फर्डिनैंड किटेल का योगदान स्मरणीय है।

जर्मनी में जन्मे इस विदेशी विद्वान ने भारत की कन्नड़ भाषा को अपना अध्ययन-जीवन समर्पित किया और उसकी जैन साहित्यिक विरासत को वैश्विक विद्वत् जगत से परिचित कराने में अमूल्य योगदान दिया। ऐसे महान भाषाविद् और भारतविद् को विनम्र नमन!

भारतीय डाक टिकटों में जैन गौरव की अनुभूतियाँ श्रृंखला...

राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज

- खुशबू जैन

भारतीय डाक टिकटों में जैन गौरव की अनुभूतियाँ अपने आप में एक गौरवपूर्ण इतिहास है। इस श्रृंखला में राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज का स्मारक डाक टिकट विशेष उल्लेखनीय है।

आचार्य श्री आनंदऋषिजी स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य थे। उनकी जन्मशती वर्ष के उपलक्ष्य में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के निवेदन पर भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा उनके सम्मान में स्मारक डाक टिकट जारी किया गया।

इस टिकट का लोकार्पण 1 अगस्त 2002 को अहमदनगर (वर्तमान अहिल्यानगर) में तत्कालीन केंद्रीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री प्रमोद महाजन के कर-कमलों से हुआ। इस आयोजन में तत्कालीन केंद्रीय जहाजरानी राज्य मंत्री श्री दिलीप गांधी की महत्वपूर्ण भूमिका एवं संयोजन रहा।

4 रुपये मूल्यवर्ग का यह चार-रंगी स्मारक टिकट 4 लाख प्रतियों में मुद्रित हुआ। टिकट का डिजाइन शंख सामंत ने किया। इसके प्रथम दिवस आवरण के लिए आवश्यक सामग्री सादड़ी महिला मंडल ट्रस्ट, पुणे द्वारा उपलब्ध कराई गई थी।

इस प्रकार आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज का यह डाक टिकट केवल एक फिलाटेलिक दस्तावेज नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रजीवन में स्थानकवासी जैन श्रमण परंपरा के योगदान की राष्ट्रीय स्तर पर अंकित एक अमूल्य स्मृति है।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

जैन गौरव

अमरचन्द बांठिया जैन

अमरचन्द बांठिया जैन का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। अमरचन्द जी बांठिया जैन बीकानेर में जन्मे और सन् 1835 में ग्वालियर आकर बस गये। अपनी सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता और कुशलता के बल पर ग्वालियर राज्य के प्रधान राजकोष गंगाजलि कोषागार के प्रधान कोषाध्यक्ष नियुक्त हुए, इस कोष में अकूत सम्पत्ति जमा थी। 1857 में भारत वर्ष में स्वतंत्रता संग्राम अपने चरम पर था। महारानी झाँसी, तात्या टोपे जैसे वीर सेनानी भारत की स्वतंत्रता के लिए निर्णायक युद्ध लड़ रहे थे। लगातार संघर्ष के कारण सेनानियों के सामने हथियारों और अन्नाभाव का सामना भी करना पड रहा था कि अब क्या किया जाय, तब ग्वालियर राज्य के कोषाध्यक्ष श्री अमरचन्द बांठिया जैन को बुलाया गया। इनके समक्ष सारी परिस्थितियाँ रखी गयी, वे घर से अपनी निजी सम्पत्ति लेकर आये पहले उन्होंने अपनी सम्पत्ति समर्पित की। इन सबकी प्रेरणा जगाने वाले मुनिराज बुद्धि विजय जी महाराज थे। रानी ने कहा बांठिया जी यह धन अपर्याप्त है। सैनिकों को तीन माह से वेतन नहीं दिया गया है। हम चाहते है कि प्रत्येक सैनिक को 5-5 माह का वेतन दिया जाय तीन माह का वेतन तथा दो माह का अग्रिम ऐसा पाँच माह की राशि दी जाये, अतः राजकोष से धन देना होगा। बांठिया जी ने पर्याप्त धन राशि उपलब्ध कराई। बांठिया जी के इस साहसिक सहयोग से स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों में मंद पड़ते शौर्य को जगा दिया। अंग्रेजो के विरुद्ध जोरदार युद्ध लड़ा गया। ह्यूरोज ने 16 जून को मोरार छावनी पर पूरी शक्ति से आक्रमण किया। 17 जून को बिग्रेडियर स्मिथ से राव साहब व तात्या टोपे का कड़ा मुकाबला हुआ। रानी लक्ष्मी बाई इस समय आगरा की ओर से आये सैनिकों से मोर्चा ले रही थीं। दूसरे दिन स्मिथ ने पूरी तैयारी से आक्रमण किया। रानी झाँसी ने अपनी दो सहायक सहेलियों के साथ पुरुषों की वेशभूषा में आकर सेना की कमान संभाली। युद्ध निर्णायक हुआ, जिसमें रानी को संगीन गोली एवं तलवार के वार से आँख सहित दाहिना हिस्सा सिर से कटकर गिर गया। सहेली भी लड़ते-लड़ते बलिदान हो गयी। यद्यपि आक्रमण कर्ताओं को भी रानी ने मौत के घाट उतार दिया, किन्तु घावों से वे मर्छित हो गयीं। साथियों द्वारा उन्हें पास में ही बाबा गंगादास की कुटिया में ले जाया गया। जहाँ उनका तथा उनकी सहेली का दाह-संस्कार किया गया।

रानी के इस गौरवमय ऐतिहासिक बलिदान के पश्चात् 19 जून को बांठिया जी को गिरफ्तार कर लिया गया, राजद्रोह के अपराध का आरोप लगाया गया। न्याय का ढोंग रचा गया। 21 जून को फाँसी की सजा घोषित की गयी, आयु को देखते हुए उन्हें कहा गया कि आप माफी माँग लें। बांठिया जी ने साफ इंकार किया, मुर्गा बनाकर चाबुक से पीटा गया, फिर भी माफी नहीं माँगी, पेशाब के स्थान पर बड़े-बड़े पत्थर बांधे गये। फिर भी माफी नहीं मांगी। 21 जून संध्या के समय उनके मासूम पोते को तोप से उड़ा दिया फिर भी माफी नहीं मांगी। २२ जून को सराफा बाजार में जहाँ उनका निवास स्थान था। उसके स्थान के सामने नीम के पेड़ से लटकाकर बिग्रेडियर नैपियर ने फाँसी दी, जिस रस्सी से बांधा वह टूट गयी, नीम की जिस डाली से बांधा वह डाली भी टूट गई। फिर मोटी रस्सी, मोटी डाल से बांध कर फांसी दी गयी, तीन दिन तक उनके शरीर को लटकाये रखा, जिससे समाज में दहशत फैल जाये। फांसी के समय से पूर्व ही नवकार मंत्र का जाप कर रहे थे। ग्वालियर के सराफा बाजार में वह नीम का पेड़ आज भी है, जहाँ उनकी प्रतिमा लगी हुई है। जैन समाज नहीं जानता है कि यह प्रतिमा जैन क्रांतिकारी अमर बलिदानी श्री अमरचन्द जी बांठिया जैन की है। अमरचन्द जी बांठिया जैन राष्ट्रधर्म निभाकर अमर हो गये।

जैन कॉन्फ्रेंस के नवगठित 30 सदस्यीय विश्वस्त मंडल की प्रथम बैठक जैन भवन दिल्ली में संपन्न

श्री विजय जैन, पानीपत-चेयरमैन, श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई-वाईस चेयरमैन एवं श्री जशवंत जैन, दिल्ली-समन्वयक के पद पर निर्विरोध निर्वाचित

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के नव संशोधित संविधान के अनुसार गठित 30 सदस्यीय विश्वस्त मंडल (Board of Trustees) की प्रथम बैठक जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय मुख्यालय 'जैन भवन', गोल मार्केट, नई दिल्ली में गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। बैठक में देशभर से पधारे विश्वस्त मंडल के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

बैठक में संशोधित संविधान के प्रावधानों के अनुरूप विश्वस्त मंडल के चेयरमैन, वाईस चेयरमैन एवं समन्वयक का चयन सर्वसम्मति से किया गया। क्रमशः श्री विजय जैन, पानीपत को चेयरमैन, श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई को वाईस चेयरमैन तथा श्री जशवंत जैन, दिल्ली को समन्वयक चुना गया। सभी विश्वस्तों ने नवदायित्व प्राप्त पदाधिकारियों का हर्षध्वनि के साथ अभिनंदन करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ प्रेषित की।

बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस की भावी कार्ययोजना एवं आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तृत एवं सार्थक चर्चा हुई। देशभर से उपस्थित विश्वस्तों ने संगठन को अधिक सुदृढ़, व्यापक एवं समाजोपयोगी बनाने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर विश्वस्त मंडल के सदस्यों ने विशेष प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि नव संशोधित संविधान के माध्यम से पहली बार समाज के विभिन्न वर्गों एवं क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देते हुए 30 सदस्यीय विश्वस्त मंडल का गठन किया गया है। यह समावेशी स्वरूप जैन कॉन्फ्रेंस को देशभर में अधिक व्यापकता और नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

विश्वस्तों ने एकजुट होकर संगठन की मूल भावना, उद्देश्यों एवं परंपराओं को आगे बढ़ाने तथा जैन समाज के हित में प्रभावी एवं रचनात्मक कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। बैठक का वातावरण आत्मीयता, संगठनात्मक एकता एवं भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से ओतप्रोत रहा।

नव-निर्वाचित चेयरमैन श्री विजय जैन ने सभी विश्वस्तों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि वे सामूहिक भावना के साथ जैन कॉन्फ्रेंस की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने तथा संगठन को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए पूर्ण समर्पण से कार्य करेंगे।

– जैन प्रकाश संपादकीय टीम

(पृष्ठ 1 का शेष 'शिव संदेश')

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं आसे, जयं सए। जय भुंजंतो, भासंतो, पावं-कम्मं न बंधइ।।

– श्री दशवेकालिक सूत्र अ. 4, गा. 8

विवेक पूर्वक चलने-बैठने, सोने, खाने, बोलने से जीव को पाप कर्म नहीं लगता, क्योंकि क्रियाएं सभी शरीर करता है और जीव इन क्रियाओं में अक्रिय व अलिप्त रहकर अपने स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव में रमण करता है।

धर्म - अर्थात् आत्मा का स्वभाव जो जीव अपने स्वभाव में रहता है उसके जीवन में ये दस लक्षण व दश यति धर्म सहजता से प्रकट होते हैं। क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिंचन, ब्रह्मचर्य आदि जीवन में झलकते हैं।

प्रत्येक आत्मार्थी के जीवन में ये दस धर्म आत्मसात हो, तो पर्युषण पर्व की सम्यक् आराधना होगी। अपने जीवन में मिथ्यात्व व मोह का त्याग करते हुए अनुप्रेक्षाओं को भावित कर वैराग्य भाव को बढायें। अनित्य, अषरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि इन भावनाओं के चिंतन से वैराग्य बढेगा। आश्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ, धर्म इन भावनाओं के चिंतन से समझ बढेगी व जीव चारित्र की ओर आगे बढेगा। 22 परीषहों पर जीवन में विजय प्राप्त कर चारित्र धर्म का पालन करें, 12 तप के द्वारा कर्म क्षय करते हुए अपने लक्ष्य मोक्ष की ओर सतत् बढ़ते चले जाएं, तो पर्व आराधना सफल होगी।

आप सभी संवर निर्जरा की ओर बढें। भेद विज्ञान, कर्म सिद्धांत, अनेकान्तवाद के सिद्धान्त को स्वीकार कर त्याग, वैराग्य, वीतरागता की ओर चतुर्विध संघ अग्रसर हो यही मंगल कामना।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') किसी प्रभावशाली व्यक्तित्व की उपस्थिति या भावावेश इतना प्रबल नहीं होना चाहिए कि जैन धर्म के सर्वोच्च आध्यात्मिक आदर्शों की तुलना किसी सांसारिक व्यक्ति से कर दी जाए। संत तीर्थंकरों के मार्ग के साधक और उनके संदेश के संवाहक हैं संतों को तीर्थंकरों का प्रतिनिधि कहा जा सकता है, तीर्थंकर तुल्य नहीं।

इस प्रसंग में गुरु-परंपरा का स्मरण भी स्वाभाविक है। जिन मुनिराज से यह वक्तव्य आया, उनकी गुरु-परंपरा पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे महान तपस्वी से जुड़ी रही है। जैन समाज ही नहीं, व्यापक भारतीय समाज में भी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज श्रद्धा और सम्मान के विषय रहे हैं। मुझे स्वयं इंदौर के गोमटगिरि तीर्थ पर उनके दर्शन और संवाद का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी वाणी की सबसे बड़ी विशेषता थी-शब्दों का संयम और विचारों की गहराई। उनका प्रत्येक शब्द नपा-तुला होता था।

ऐसी गुरु-परंपरा से जुड़े प्रत्येक साधु-साध्वी के लिए यह स्मरण आवश्यक है कि सार्वजनिक मंच पर उनकी वाणी में केवल उनका व्यक्तित्व नहीं बोलता, बल्कि पूरी गुरु-परंपरा की गरिमा प्रतिबिंबित होती है, इसलिए यह टिप्पणी किसी व्यक्ति, किसी दिगंबर-श्वेतांबर समुदाय अथवा किसी राजनीतिक विचार धारा के विरोध में नहीं है। यह केवल तीर्थंकरों की सर्वोच्चता और जैन दर्शन की मर्यादा के पक्ष में एक विनम्र किंतु स्पष्ट आग्रह है।

राजनेताओं का सम्मान हो। राष्ट्रसेवकों का अभिनंदन हो। संतों के प्रति श्रद्धा हो। लेकिन इन सबके बीच तीर्थंकरों की गरिमा की सीमा सदैव स्पष्ट रहनी चाहिए। तीर्थंकर तुलना से परे हैं। तीर्थंकरों की महिमा किसी तुलना से न बढ़ती है, न घटती है। उनकी महिमा स्वयं में पूर्ण है। उस महिमा की रक्षा करना केवल श्रद्धा नहीं, बल्कि जैन समाज की वैचारिक जिम्मेदारी भी है।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

जैन कॉन्फ्रेंस मुख्यालय में भारतीय सेना के उप-प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन का अभिनंदन

जैन समाज के गौरव का सर्वोच्च सैन्य दायित्व तक पहुँचना ऐतिहासिक उपलब्धि : स्थानकवासी जैन समाज ने किया आत्मीय स्वागत

नई दिल्ली : राष्ट्रसेवा के सर्वोच्च दायित्वों में से एक पर आसीन भारतीय सेना के 50वें उप-प्रमुख (Vice Chief of the Army Staff) लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन, AVSM, SM का शुक्रवार, 4 सितम्बर 2026 को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के केन्द्रीय मुख्यालय 'जैन भवन' में आत्मीय एवं गरिमापूर्ण अभिनंदन किया गया।

जैन समाज के लिए यह अवसर विशेष रूप से ऐतिहासिक रहा, क्योंकि लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन, जैन समाज से भारतीय सेना के इतने वरिष्ठतम दायित्व तक पहुँचने वाले प्रथम व्यक्तित्व हैं। भारतीय सेना के शीर्ष नेतृत्व में उनकी यह उपलब्धि संपूर्ण जैन समाज के लिए गौरव का विषय है तथा देश के युवाओं के लिए राष्ट्रसेवा, अनुशासन, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणादायी मिसाल है।

सेना के इस वरिष्ठतम् दायित्व पर पहुँचने के बाद यह उनका पहला अवसर था, जब वे जैन समाज की प्रमुख राष्ट्रीय संस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय मुख्यालय 'जैन भवन' में पधारे। वे अपनी धर्मपत्नी के साथ सपरिवार जैन भवन पहुँचे। उनके आगमन पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं देशभर से पधारे विश्वस्त मंडल के सदस्यों ने उनका आत्मीय स्वागत किया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विनय कुमार जैन सहित राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए राष्ट्रसेवा में उनके उल्लेखनीय योगदान की अनुमोदना की।

कार्यक्रम का समन्वयन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू ने किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की जम्मू-कश्मीर शाखा के प्रतिनिधियों द्वारा तैयार विशेष 'श्रावक प्रतिक्रमण' वीडियो का भी लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन ने लोकार्पण किया। लगभग एक घंटे की अवधि का यह विशेष वीडियो पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिदिन किए जाने वाले श्रावक प्रतिक्रमण को शुद्ध उच्चारण, सरल प्रस्तुति और आकर्षक दृश्य-श्रव्य माध्यम के साथ प्रस्तुत करता है। इसे जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला कार्यकारिणी समिति की सदस्य श्रीमती मोनिका जैन, स्नेह जैन एवं उनकी महिला सहयोगियों ने मिलकर तैयार किया है।

इस वीडियो के लोकार्पण का उद्देश्य यह है कि आगामी पर्युषण पर्वों में देशभर का स्थानकवासी जैन समाज घर बैठे शुद्ध उच्चारण एवं विधिपूर्वक श्रावक प्रतिक्रमण का लाभ प्राप्त कर सके। लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे धार्मिक संस्कारों एवं तकनीक के समन्वय का उपयोगी प्रयास बताया।

कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मंडल के देशभर से पधारे सभी ट्रस्टी एवं सदस्य विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी ने जैन समाज के इस गौरवशाली व्यक्तित्व के विचारों को आत्मीयता एवं उत्सुकता से सुना। लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन ने अपने सैन्य जीवन, राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध तथा युवाओं के लिए अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रसेवा के महत्व से जुड़े प्रेरणादायी विचार साझा किए।

इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन सहित जैन कॉन्फ्रेंस के अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के उपरांत लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मंडल के सदस्यों एवं वरिष्ठ राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ स्नेहपूर्ण वातावरण में भोजन किया और सभी से आत्मीय मुलाकात की। राष्ट्रसेवा में समर्पित जैन समाज के इस गौरवशाली व्यक्तित्व का जैन भवन आगमन सभी के लिए स्मरणीय एवं प्रेरणादायी बन गया।

लेफ्टिनेंट जनरल श्री संदीप जैन की उपलब्धि न केवल जैन समाज की प्रतिष्ठा को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने वाली है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश भी देती है कि जैन संस्कारों से अनुप्राणित व्यक्ति राष्ट्रसेवा के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचकर देश का गौरव बढ़ा सकता है। – जैन प्रकाश संपादकीय टीम

दिगंबर-स्थानकवासी साधुओं का मंगल मिलन, 18 दिवसीय पयुर्षण मिलकर मनाएंगे

मैसूर (कर्नाटक) : शांतिनाथ जैन दिगंबर मंदिर में दिगंबर जैन आचार्य गुलाब भूषण जी एवं राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' का आत्मीय मिलन हुआ। मैसूर के इतिहास में प्रथम बार श्वेतांबर स्थानकवासी जैन संघ के अष्ट दिवसीय पयुर्षण पर्व और दिगंबर जैन समाज के 10 दिवसीय पयुर्षण पर्व 8 सितंबर से 26 सितंबर तक 18 दिनों तक एक साथ बनाने का निर्णय लिया। इतना ही नहीं श्वेतांबर पर्व मनाने के लिए आचार्य गुलाब भूषण जैन स्थानक भवन पधारेंगे एवं दिगंबर पयुर्षण पर्व मनाने के लिए राष्ट्रसंत कमलमुनि म., दिगंबर जैन मंदिर पधारकर पर्व को मनाएंगे।

अमेरिका में स्थानक उपाश्रय भवन का उद्घाटन

जैन सोसायटी ऑफ कोलाराडो डेनवर यू.एस.ए. में पंच दिवसीय श्वेताम्बर जिनालय, दिगम्बर जिनालय प्रतिष्ठा महोत्सव एवं स्थानक उपाश्रय भवन उद्घाटन का भव्यातिभव्य समारोह, आगम वरघोड़ा, उत्तराध्ययन सूत्र वांचन के साथ पाठशाला का शुभारंभ बड़े ही धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। स्थानक भवन उद्घाटन के लिये दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ से वरिष्ठ स्वाध्यायी बहन एवं राष्ट्रसंत पू. नम्रमुनि जी म. के उपासक एवं उपासिका ने पधारकर मन्त्रोंचारण, जाप एवं प्रवचन के साथ उद्घाटन कराया। दोनों जिनालय के अध्यक्ष, स्थानकवासी, तेरापंथ के अध्यक्षों एवं समस्त अन्य पदाधिकारी, श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों की सेवाऐं अत्यन्त सराहनीय रही। पाँचों दिवस गौतम प्रसादी की व्यवस्था साहनीय रही। अंत में राष्ट्रसंत पू. श्री नम्रमुनि जी म. ने आशीर्वाद के साथ ऑन लाईन मंगलपाठ सुनाया। प्रेषक : सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रांत जीवदया योजना द्वारा गौशाला में मूक प्राणियों की सेवा

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश शाखा द्वारा श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत जीवदया योजना के अन्तर्गत मूक प्राणियों की सेवार्थ एक कार्यक्रम दिल्ली स्थित गौशाला में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, पर्यवेक्षक श्री संजय मदनलाल जैन, महामन्त्री श्री ललित ओसवाल जैन, जीवदया योजना के अध्यक्ष श्री सुधीर ओसवाल जैन, मंत्री श्री अनिल जैन, कार्यकारिणी सदस्य श्री महावीर प्रसाद जैन, अहिंसा विहार श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुभाष पारख जैन, महामन्त्री श्री अमित जैन, कोषाध्यक्ष श्री आशीष जैन, श्री राकेश जैन, श्रीमती संगीता ओसवाल, आदि अनेक समाजसेवियों ने गौशाला में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करते हुए जीवन कर्मों में पुण्यदायी पलों को आत्मसात किया।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात शाखा द्वारा गुजरात में स्थानकों को नि:शुल्क कुर्सियों का वितरण

अहमदाबाद (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, गुजरात प्रांतीय शाखा द्वारा श्रमण संघीय स्थानकवासी जैन श्रीसंघों के धार्मिक आयोजनों, प्रवचन एवं अन्य सामाजिक-धार्मिक गतिविधियों में उपयोग के लिए विभिन्न जैन स्थानकों को नि:शुल्क कुर्सियों का वितरण किया गया।

इस सेवा कार्य के अंतर्गत अक्षर टाउनशिप, आशानगर-उधना, बारडोली, ए.के. रोड, पांडेसरा, पांडेसरा स्थित सुमीरमुनी कीर्ति वीरवाल चैरिटेबल ट्रस्ट, जनता नगर महावीर भवन, सायन-ओलपाड, पर्वत पाटिया, विक्रमनगर, उधना, भेस्तान, ओढ़व, शाहीबाग, नरोडा, कांकरिया (अहमदाबाद), शाहीबाग रोड, बुहारी-तापी, वालोड-तापी, वीरपुर-महीसागर, मोडासा-अरवल्ली, संजेली-दाहोद, सलाल-साबरकांठा, ईडर-साबरकांठा, अंबाजी-बनासकांठा, गांधीनगर, विजापुर-मेहसाणा, विसनगर-मेहसाणा, गोधरा-पंचमहल स्थित अंबेश सौभाग्य सेवा ट्रस्ट (मेवाड़ संघ), अब्रामा-वलसाड तथा गोधरा-पंचमहल के जैन स्थानकों को कुर्सियाँ उपलब्ध कराई गई। जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांतीय शाखा के इस सेवा उपक्रम से अनेक स्थानकवासी जैन श्रीसंघों को धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन में सुविधा मिलेगी। समाजहित एवं धर्मसेवा से जुड़ा यह कार्य निश्चित रूप से प्रशंसनीय और प्रेरणादायी है। प्रेषक : विनोद धोका जैन, प्रांतीय महामंत्री

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस के विशिष्ट प्रतिनिधिमंडल का एक दिवसीय सूरत प्रवास संपन्न

आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी महाराज की मंगल सन्निधि में 85वें जन्मोत्सव के निमंत्रण पत्र का विमोचन

सूरत (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के विशिष्ट प्रतिनिधिमंडल का एक दिवसीय सूरत प्रवास संपन्न हुआ। प्रतिनिधिमंडल में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन, विश्वस्त मंडल के ट्रस्टी श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर तथा ट्रस्टी श्री जयंतीलाल कूकड़ा जैन, सूरत शामिल रहे।

प्रवास के दौरान सूरत अवध संग्रीला में विराजमान आचार्य सम्राट, योगगुरु, जैन धर्म दिवाकर पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज के दर्शन, प्रवचन एवं मंगल सन्निधि का लाभ प्रतिनिधिमंडल ने प्राप्त किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विनय जैन, पानीपत भी उपस्थित रहे। आचार्य श्री के 85वें जन्मोत्सव, जो आगामी 18 सितंबर 2026 को सूरत में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित किया जाएगा, के निमंत्रण पत्र का विमोचन भी पूज्य आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में किया गया।

इसके पश्चात् प्रतिनिधिमंडल ने सूरत महानगर के विभिन्न क्षेत्रों में चातुर्मास हेतु विराजमान श्रमण संघ के साधु-साध्वियों के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उधना स्थित जैन स्थानक में विराजमान पूज्य चेतना जी म.सा. एवं पूज्य महिमा जी म.सा. के दर्शन किए। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री कैलास चंद्र जी तातेड़ एवं संरक्षक श्री शांतिलाल कोठारी जैन उपस्थित रहे।

महावीर भवन, भटार में चातुर्मासार्थ पूज्य सौरभ मुनि जी म.सा. के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। शांति भवन, घोड़दौड़ रोड में विराजमान पूज्य संयमलता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए। वहीं गुरु पुष्कर भवन, वेसु में चातुर्मासार्थ पूज्य उदिता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजू भाई ओरडिया जैन एवं भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गणेशलाल जी भोगर जैन की उपस्थिति रही।

प्रतिनिधिमंडल के इस प्रवास का उद्देश्य संत-साध्वियों की मंगल सन्निधि प्राप्त करने के साथ-साथ आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी महाराज के 85वें जन्मोत्सव के आयोजन को लेकर स्थानीय श्रीसंघों एवं श्रावक-श्राविकाओं से आत्मीय संपर्क स्थापित करना भी रहा। एक ही दिन में सूरत के विभिन्न क्षेत्रों में संतों के दर्शन एवं श्रीसंघों से संपर्क का यह प्रवास अत्यंत आध्यात्मिक एवं सार्थक रहा। - जैन प्रकाश संपादकीय टीम

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

श्रीमान् चांदमल पामेचा जैन का स्वर्गवास

अहमदाबाद (गुजरात) : स्व. श्री जवानमल जैन के पुत्र श्री शौकीन जी, श्री ललित जैन के पिताजी श्रीमान चांदमल पामेचा जैन का स्वर्गवास 31 अगस्त को हो गया। प्रेषक : पामेचा परिवार

श्री लालचंद कर्नावट पुणे का संथारा पूर्णाहुति एवं देहदान

पूना (महाराष्ट्र) : श्री लालचंदजी फूलचंदजी कर्नावट जैन (उम्र 75 वर्ष) बुधवार दिनांक 2 सितंबर, दोपहर 12:06 बजे दूरभाष द्वारा पूज्य आचार्य भगवंत शिवमुनिजी म.सा. के मुखारबिंद से सजग अवस्था में परिवार संघ समाज के उपस्थिती में संथारा ग्रहण किया। रविवार पाँचवे दिवस पर उनकी संथारा पूर्णाहुति हुई। प्रेषक : कर्नावट परिवार (पुणे)

श्रीमती पुष्पा देवी नाहर जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्रीमती पुष्पा देवी नाहर जैन धर्मपत्नी श्री मदनलाल नाहर जैन (सेनेटर मेंबर) का 31 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। प्रेषक : नाहर परिवार

श्रीमती सरलाबाई बाफना जैन का स्वर्गवास

पोरूर (तमिलनाडु) : सुश्राविका श्रीमती सरलाबाई बाफना जैन धर्मपत्नी श्री उगमराज बाफना जैन का देहावसान 31 अगस्त को दोपहर में हो गया। प्रेषक : बाफना परिवार

सुश्राविका श्रीमती शांताबाई जी दुग्गड़ जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचंद दुग्गड़ जैन वनाग्राम-चेन्नई का दिनांक 1 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। आपका धर्ममय, सरल एवं संस्कारपूर्ण जीवन सदैव स्मरणीय रहेगा। आपके सुपुत्र श्री अभिषेक दुग्गड़, जैन कॉन्फ्रेंस व श्रमण संघ के अत्यंत ऊर्जावान कार्यकर्ता है तथा सेवा कार्यों में निरंतर संलग्न रहते हैं। प्रेषक : दुग्गड़ परिवार

श्रीमती प्रेमदेवी सुराणा जैन का स्वर्गवास

पनवेल (महाराष्ट्र) : श्रीमती प्रेमदेवी सुराणा जैन धर्मपत्नी महेन्द्र जैन पनवेल का 03 सितम्बर को आकस्मिक निधन हो गया।

सौ. आशा छाजेड़ जैन का स्वर्गवास

पूना (महाराष्ट्र) : सौ. आशा छाजेड़ जैन धर्मपत्नी सुन्दरलाल छाजेड़ जैन (उम्र 70 वर्ष) का आज 05 सितम्बर सायं 5 बजे स्वर्गवास हो गया। प्रेषक : छाजेड़ परिवार

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

सूरत में राष्ट्रसंत श्री सौरभ मुनि जी महाराज, युवा प्रेरक श्री विज्ञान मुनि जी महाराज साहब के सान्निध्य में माता-पिता वंदन समारोह का प्रेरणादायक आयोजन

पोरूर में गुरुद्वय की जन्म जयंती मनाई गई

पोरुर (तमिलनाडु) : श्रमण सूर्य मरूधर केसरी, प्रवर्तक परम पूज्य गुरुदेव श्री मिश्रीमल जी महाराज की 136वीं जन्म जयंती एवं शेरे राजस्थान, लोकमान्य संत, प्रवर्तक परम पूज्य गुरुदेव श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत' की 98वीं जन्म जयंती के पावन प्रसंग पर पूज्य महासती श्री मंगलज्योति जी म. एवं पूज्य महासती श्री रक्षाज्योति जी म. ठाणा की पावन निश्रा में, मुनिसुव्रत मंदिर प्रांगण में श्री एस.एस. जैन संघ, पोरूर के तत्वावधान में गुणानुवाद, तप-त्याग एवं परमार्थ भावना के साथ जन्मोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

पूज्य गुरुदेवों का संपूर्ण जीवन परमार्थ, सेवा एवं जीवदया की प्रेरणा से ओत-प्रोत रहा। समारोह के संपूर्ण लाभार्थी श्री मुकेश जी राकेश गुगलिया रहे। समारोह में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय समन्वयक जोन - 1 श्री सुरेश लुणावत जैन सहित बड़ी संख्या में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी व शहर के गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 08-09-2026
Date of Posting : 14/15-09-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 26 ✲ पृष्ठ : 8
माह : सितम्बर ✲ सप्ताह : 08 सितम्बर से 14 सितम्बर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

राय बहादुर मेजर जनरल दीवान बिशनदास जैन
जम्मू-कश्मीर के शिखर प्रशासक और स्थानकवासी जैन समाज की एकता के पुरोधा

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने धर्म और समाज के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखते हुए प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, उद्योग और सार्वजनिक जीवन में असाधारण प्रतिष्ठा अर्जित की। राय बहादुर मेजर जनरल दीवान बिशनदास जी जैन इसी गौरवशाली परंपरा के एक विलक्षण व्यक्तित्व थे। जम्मू-कश्मीर रियासत के उच्चतम प्रशासनिक पदों तक पहुँचे दीवान बिशनदास जी केवल एक कुशल प्रशासक ही नहीं, बल्कि पंजाब की स्थानकवासी जैन परंपरा के अत्यंत प्रतिष्ठित सामाजिक नेता और जैन एकता के समर्थक भी थे।

दीवान बिशनदास जी का परिवार श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन परंपरा को मानने वाला अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार था। उपलब्ध पुराने जीवनी-संदर्भ में इस परिवार का इतिहास बीकानेर से जुड़ा बताया गया है। कई पीढ़ियाँ पूर्व यह परिवार बीकानेर से सिरसा, फिर कसूर पहुँचा। महाराजा रणजीत सिंह के समय कसूर से लाहौर, फिर मजीठा (अमृतसर), उसके बाद सियालकोट और अंततः जम्मू में आकर बसा। इस प्रकार इस परिवार की जीवन-यात्रा पंजाब और जम्मू-कश्मीर के व्यापक सामाजिक एवं प्रशासनिक परिवेश से गहराई से जुड़ गई।

परिवार के पूर्वज लाला दामामलजी महाराजा रणजीत सिंह के समय पंजाब में प्रतिष्ठित अहलकारों में रहे। आगे इसी परिवार में ऐसे अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

राय बहादुर दीवान बिशनदास जी का जन्म विक्रम संवत् 1921 अर्थात ईस्वी 1865 जनवरी माह में हुआ था। उनकी प्रतिभा और बुद्धिमत्ता प्रारंभ से ही असाधारण थी। उन्होंने अपनी योग्यता के बल पर प्रशासनिक सेवा में निरंतर उन्नति की और साधारण पद से बढ़ते हुए जम्मू-कश्मीर रियासत के सर्वोच्च प्रशासनिक दायित्व तक पहुँचने का गौरव प्राप्त किया।

दीवान बिशनदास जी ने सन् 1888 में कश्मीर स्टेट की सेवा में प्रवेश किया। प्रारंभिक सेवा में वे तत्कालीन महाराजा प्रताप सिंह जी के Private Secretary रहे। उनकी प्रशासनिक योग्यता और कार्यकुशलता से प्रभावित होकर उन्हें आगे अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे गए। वे Military Secretary to the Commander-in-Chief of Kashmir Army के पद पर रहे। यह दायित्व अपने आप में उनकी प्रशासनिक क्षमता और महाराज के विश्वास का प्रमाण था। इसके पश्चात उन्होंने जम्मू-कश्मीर रियासत में Home Minister और फिर Revenue Minister के रूप में कार्य किया। अपनी निरंतर उत्कृष्ट सेवाओं के बल पर वे आगे चलकर कश्मीर स्टेट के Chief Minister के पद तक पहुँचे। इस प्रकार एक जैन परिवार में जन्मा यह प्रतिभाशाली व्यक्तित्व रियासत के सर्वोच्च प्रशासनिक पदों में प्रतिष्ठित हुआ।

दीवान बिशनदास जी की सेवाओं और प्रशासनिक योगदान को तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने भी मान्यता प्रदान की। उनके नाम के साथ राय बहादुर, C.I.E. (Companion of the Order of the Indian Empire) तथा C.S.I. (Companion of the Order of the Star of India) जैसे प्रतिष्ठित सम्मान जुड़े थे। उन्हें सन् 1911 में 'राय बहादुर' की उपाधि प्रदान की गई। आगे उन्हें C.I.E. तथा C.S.I. के सम्मान प्राप्त हुए। यह उस समय किसी भारतीय प्रशासक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण राजकीय प्रतिष्ठा मानी जाती थी। उनका प्रशासनिक कद इसी तथ्य से स्पष्ट होता है कि वे जम्मू-कश्मीर की सेना के शीर्ष सैन्य प्रशासन से लेकर गृह, राजस्व और अंततः रियासत के सर्वोच्च प्रशासनिक पद तक पहुँचे।

स्थानकवासी जैन समाज के लिए पद से कहीं बड़ा था उनका समर्पण : इतने उच्च राजकीय पदों पर रहते हुए भी दीवान बिशनदास जी अपनी स्थानकवासी जैन पहचान और समाज से कभी दूर नहीं हुए। वे श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन समाज के अत्यंत सम्मानित अग्रणी पुरुष थे। विशेष रूप से पंजाब की स्थानकवासी जैन परंपरा में उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था। वे जैन कॉन्फ्रेंस एवं स्थानकवासी जैन समाज के सम्मेलनों में सक्रिय रहते और संगठनात्मक विषयों में अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाते थे। अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रारंभिक दौर में भी उनका सम्मान इतना व्यापक था कि उन्हें संगठन के नेतृत्व के लिए चुना गया। एक अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा अजमेर में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय साधु-सम्मेलन एवं जैन कॉन्फ्रेंस प्रथम अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष चुना गया, जहाँ उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया एवं एक सच्चे समाजसेवी की भूमिका निभाई। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पंजाब के क्षेत्रीय लाहौर एवं सियालकोट क्षेत्रीय अधिवेशन की आपने अध्यक्षता की। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रथम मोरबी गुजरात में आयोजित सम्मेलन के आप सभापति चुने गए परंतु प्रशासनिक कार्यों के कारण वहाँ आप प्रत्यक्ष उपस्थिति ना हो पाए जिसकी पूर्ति आपने लगातार जानकारी लेकर सक्रियता से निभाकर की।

> अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रारंभिक दौर में भी उनका सम्मान इतना व्यापक था कि उन्हें संगठन के नेतृत्व के लिए चुना गया। एक अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा अजमेर में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय साधु-सम्मेलन एवं जैन कॉन्फ्रेंस प्रथम अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष चुना गया, जहाँ उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया एवं एक सच्चे समाजसेवी की भूमिका निभाई।

स्थानकवासी जैन एकता के समर्थक : दीवान बिशनदास जी का सबसे उल्लेखनीय सामाजिक पक्ष था-जैन समाज में एकता और संगठन की भावना। उस समय पंजाब और उत्तर भारत के स्थानकवासी जैन समाज में विभिन्न क्षेत्रों और संस्थाओं को एक संगठनात्मक सूत्र में जोड़ना एक बड़ी चुनौती थी। दीवान बिशनदास जी जैसे प्रतिष्ठित और सर्वमान्य व्यक्तित्व का साथ इस प्रयास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। वे केवल अधिवेशनों में औपचारिक उपस्थिति देने वाले व्यक्ति नहीं थे, बल्कि समाज के संगठनात्मक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि लेकर सक्रिय भागीदारी करते थे। शहजाद राय शोध संस्थान में संग्रहित प्राचीन दस्तावेजों में उनके बारे में स्पष्ट संकेत मिलता है कि वे समय-समय पर जैन कॉन्फ्रेंस के अधिवेशनों में उपस्थित होते और सक्रिय रूप से समाज-नेतृत्व में भाग लेते थे।

दीवान बिशनदास जी के परिवार की प्रतिष्ठा केवल उन्हीं तक सीमित नहीं रही। उनके छोटे भाई दीवान अनंतरामजी भी जम्मू-कश्मीर के महाराजा के Private Secretary रहे और बाद में वकालत के क्षेत्र में आए। उनकी अगली पीढ़ी में भी परिवार के सदस्यों ने प्रशासन, सेना, शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। उपलब्ध पारिवारिक विवरण के अनुसार उनके परिवार की यह परंपरा आगे भी चली। उनके परिवार के सदस्य लाला प्रभुदयालजी, लाला चेतरामजी, लाला चंदूलालजी और लाला ईश्वरदासजी सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित रहे।

राजकीय सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर भी समाज की जड़ों से जुड़े रहना उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। दीवान बिशनदास जी का जीवन स्थानकवासी जैन समाज के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने यह सिद्ध किया कि जैन धर्म की अहिंसा, संयम, सत्य और सेवा की मूल भावना को सार्वजनिक जीवन में भी प्रभावी ढंग से जिया जा सकता है। वे अपने समय के उन जैन महापुरुषों में थे जिन्होंने व्यक्तिगत प्रतिभा को सामाजिक प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रतिष्ठा को समाज-सेवा में परिवर्तित किया। उनकी प्रशासनिक सफलता ने जैन समाज का गौरव बढ़ाया और उनका सामाजिक नेतृत्व स्थानकवासी जैन संगठन की एकता के लिए प्रेरक बना।

राय बहादुर मेजर जनरल दीवान बिशनदास जी इसलिए केवल जम्मू-कश्मीर रियासत के एक उच्च प्रशासक नहीं थे, वे स्थानकवासी जैन समाज के उस गौरवशाली इतिहास के प्रतिनिधि थे, जिसमें धर्मनिष्ठा, प्रतिभा, प्रशासनिक कौशल, सामाजिक चेतना और संगठनात्मक एकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

(संदर्भ शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत में संग्रहित दस्तावेज, दीवान बिशन सिंह जी के जम्मू परिवार से प्राप्त जानकारियाँ एवं जैन कॉन्फ्रेंस स्वर्ण जयंती ग्रंथ, 1952)

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906